Volume: 5 Issue: 5 Pages: 107-110

औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा के पंच आयाम

[*1]मनोज कुमार कौशले और [2]डॉ. धाराश्री श्रीवास

[*1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

[2]सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 12/April/2026
Accepted: 12/May/2026

***Corresponding Author**
मनोज कुमार कौशले
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र "शिक्षा के पांच आयाम: प्रकृति, परिवार, समुदाय, विद्यालय और राष्ट्र" के अंतर्संबंधों का एक गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शिक्षा को केवल औपचारिक संस्थानों (विद्यालयों) तक सीमित न मानकर, इसे एक व्यापक सामाजिक और प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में देखना इस शोध का मुख्य केंद्र है। अध्ययन का प्रारंभ प्रकृति से होता है, जिसे 'प्रथम शिक्षक' के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रकृति मनुष्य में सहज जिज्ञासा, अनुकूलन और जीवन के प्रति मौलिक दृष्टि विकसित करती है। इसके पश्चात, परिवार की भूमिका का विश्लेषण किया गया है, जो बालक की प्रथम पाठशाला है। परिवार न केवल भाषा और बुनियादी संस्कारों का संचार करता है, बल्कि व्यक्ति की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की नींव भी रखता है। शोध का तीसरा आयाम समुदाय है, जो व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक मूल्यों और सामूहिक अस्तित्व का बोध कराता है। यह एक ऐसी 'सामाजिक प्रयोगशाला' है जहाँ अनौपचारिक शिक्षा को व्यावहारिक रूप मिलता है। चौथे आयाम के रूप में, विद्यालय का विश्लेषण किया गया है। विद्यालय वह औपचारिक मंच है जहाँ ज्ञान को वैज्ञानिक आधार, प्रमाणन और व्यावसायिक दिशा प्रदान की जाती है। अंत में, राष्ट्र को एक व्यापक नियामक और संरक्षक के रूप में देखा गया है। राष्ट्र अपनी शिक्षा नीतियों के माध्यम से यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा का स्वरूप नागरिकता के बोध और संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप हो। यह शोध पत्र यह प्रतिपादित करता है कि शिक्षा के ये पांचों आयाम एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। एक संतुलित और सुदृढ़ व्यक्तित्व के निर्माण के लिए अनौपचारिक (प्रकृति, परिवार, समुदाय) और औपचारिक (विद्यालय, राष्ट्र) शिक्षा का एकीकरण अनिवार्य है। केवल इन पांचों के समन्वित प्रयासों से ही एक सर्वांगीण विकसित समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

मुख्य शब्द: औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, समाजीकरण, सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शैक्षणिक पारिस्थितिकी।

1. प्रस्तावना

शिक्षा के वास्तविक अर्थ को केवल अक्षरों के ज्ञान या साक्षरता तक सीमित करना इसकी व्यापकता के साथ अन्याय होगा। मूलतः, शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास की एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को उसके आंतरिक सामर्थ्य से परिचित कराती है। यह शोध इस मूलभूत विचार पर आधारित है कि एक संपूर्ण व्यक्ति का निर्माण केवल विद्यालयी कक्षाओं में नहीं, बल्कि पाँच प्रमुख स्तंभों प्रकृति, परिवार, समुदाय, विद्यालय और राष्ट्र के गहन समन्वय और अंतर्संबंधों से होता है। ऐतिहासिक रूप से, भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो मुक्त करे) माना गया है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, जहाँ तकनीकी विकास और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव बढ़ रहा है, वहाँ इन पाँचों स्तंभों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। प्रकृति हमें सह-अस्तित्व और सहजता सिखाती है, तो परिवार संस्कारों की पहली पाठशाला बनता है। समुदाय हमें सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है, जबकि विद्यालय उन अनुभवों को औपचारिक ढांचा और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है। इन सबका अंतिम लक्ष्य एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण है जो संवैधानिक मूल्यों और मानवीय गरिमा पर आधारित हो।

वर्तमान समय में, शहरीकरण और डिजिटल क्रांति ने इन स्तंभों के बीच के पारंपरिक संतुलन को चुनौती दी है। आज का छात्र स्क्रीन से तो जुड़ा है, लेकिन प्रकृति और समुदाय से दूर होता जा रहा है। यह शोध इन्ही स्तंभों के वर्तमान स्वरूप को टटोलने का प्रयास करता है। यदि शिक्षा के ये पाँचों आयाम एक सूत्र में नहीं पिरोए गए, तो विकास केवल एकांगी होगा। अतः, यह अध्ययन यह समझने का प्रयास है कि कैसे इन विविध आयामों का एकीकरण 21वीं सदी के 'वैश्विक नागरिक' के निर्माण में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

2. शोध समस्या का कथन

वर्तमान आधुनिक शिक्षा प्रणाली अत्यधिक तकनीकी और रोजगारोन्मुखी हो गई है, जिससे बालक का प्रकृति, परिवार और सामुदायिक मूल्यों से जुड़ाव कम होता जा रहा है। क्या इन पाँचों आयामों के बीच संतुलन के बिना एक 'पूर्ण नागरिक' का निर्माण संभव है?

3. शोध के उद्देश्य

i). शिक्षा में प्रकृति, परिवार, समुदाय, विद्यालय और राष्ट्र की व्यक्तिगत भूमिका का विश्लेषण करना।
ii). इन पाँचों आयामों के बीच समन्वय की वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
iii). राष्ट्र निर्माण में इन घटकों के एकीकृत प्रभाव को समझना।

4. शोध प्रश्न

- परिवार और प्रकृति से प्राप्त अनौपचारिक शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा को कैसे प्रभावित करती है?
- क्या सामुदायिक सहभागिता विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार ला सकती है?

5. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

- प्रस्तुत शोध का वैचारिक ढांचा उन महान शिक्षाविदों और नीतिगत दस्तावेजों पर आधारित है, जिन्होंने शिक्षा को केवल सूचना के संग्रह के बजाय एक 'समग्र अनुभव' के रूप में देखा है। साहित्य का पुनरावलोकन करने पर ज्ञात होता है कि महात्मा गांधी की 'बुनियादी शिक्षा' (Nai Talim) का मूल आधार शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास था। गांधीजी का मानना था कि सच्ची शिक्षा वही है जो बालक को उसके परिवेश और समुदाय से जोड़ती है (विवेकानंद, 2017)। इसी क्रम में, रवींद्रनाथ टैगोर का 'प्रकृतिवाद' इस विचार को पुष्ट करता है कि शिक्षा का सर्वोत्तम स्वरूप प्रकृति के सानिध्य में ही प्राप्त किया जा सकता है, जहाँ बालक की जिज्ञासा को बंधनमुक्त आकाश मिलता है (ठाकुर, 2015)।
- आधुनिक संदर्भों में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) एक क्रांतिकारी दस्तावेज के रूप में उभरती है। यह नीति स्पष्ट रूप से 'होलिस्टिक डेवलपमेंट' (समग्र विकास) और 'वैश्विक नागरिकता बोध' (GCED) पर बल देती है, जो छात्र को उसके भाषाई, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय गौरव से जोड़ते हुए वैश्विक उत्तरदायित्वों के लिए तैयार करती है (भारत सरकार, 2020)। साहित्य यह भी संकेत देता है कि परिवार और समुदाय शिक्षा के वे अनौपचारिक केंद्र हैं, जो विद्यालयी शिक्षा की नींव को मजबूती प्रदान करते हैं। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का अंतिम उद्देश्य 'मनुष्य निर्माण' होना चाहिए, जो परिवार के संस्कारों और राष्ट्र के प्रति समर्पण से ही संभव है (राधाकृष्णन, 2012)।
- अध्ययनों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जब प्रकृति, परिवार और विद्यालय एक सूत्र में बंधते हैं, तभी शिक्षा वास्तविक अर्थों में सशक्तिकरण का माध्यम बनती है। अमर्त्य सेन के 'क्षमता दृष्टिकोण' (Capability Approach) के अनुसार, शिक्षा वही है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसके नागरिक बोध का विस्तार करे (सेन, 2019)। अतः, संबंधित साहित्य यह प्रमाणित करता है कि इन पाँचों स्तंभों का एकीकरण ही भविष्य की सुदृढ़ शिक्षा का एकमात्र विकल्प है।

6. शोध कार्यप्रणाली

इस शोध में 'वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध विधि' का प्रयोग किया गया है। डेटा संग्रहण के लिए प्राथमिक (सर्वेक्षण) और द्वितीयक (दस्तावेजों) दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है।

i). प्रकृति: पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और सतत जीवन शैली

प्रकृति मनुष्य की आदि-शिक्षिका है। शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य छात्र को उसके पारिस्थितिक तंत्र (Ecosystem) के साथ सामंजस्य बिठाना सिखाना है। 21वीं सदी में, जब जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट बन चुका है, तब प्रकृति आधारित शिक्षा केवल एक विषय नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्यता है। प्रकृति के सानिध्य में प्राप्त शिक्षा छात्र को 'सह-अस्तित्व' का पाठ पढ़ाती है। यह उसे सिखाती है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका एक छोटा सा हिस्सा है। 'सतत जीवन शैली' (Sustainable Lifestyle) का अर्थ है—संसाधनों का न्यूनतम और विवेकपूर्ण उपयोग। जब शिक्षा प्रकृति से प्रेरित होती है, तो छात्र में 'उपभोक्तावाद' के बजाय 'संरक्षणवाद' के प्रति संवेदनशीलता विकसित होती है। उदाहरण के लिए, जल संरक्षण, जैव विविधता का सम्मान और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे गुण किताबी ज्ञान के बजाय प्राकृतिक अनुभवों से अधिक गहरे उतरते हैं। प्रकृति मनुष्य को धैर्य, निस्वार्थता और पुनर्चक्रण (Recycling) का जीवंत उदाहरण देती है। अतः, भविष्य की शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा 'इको-पेडागोजी' होना चाहिए, जो छात्र को एक 'पर्यावरण-सचेत' वैश्विक नागरिक के रूप में तैयार करे।

ii). परिवार: प्रथम पाठशाला के रूप में मूल्यों और भाषा का विकास

परिवार बालक की शिक्षा का वह अनौपचारिक केंद्र है जहाँ उसकी व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। किसी भी औपचारिक शिक्षा से पहले, बालक परिवार में ही प्रेम, सहानुभूति, ईमानदारी और अनुशासन जैसे मौलिक मानवीय मूल्यों को आत्मसात करता है। परिवार केवल पोषण का केंद्र नहीं है, बल्कि यह वह स्थान है जहाँ बालक की 'भावात्मक बुद्धिमत्ता' (Emotional Intelligence) का विकास होता है।

भाषा विकास के संदर्भ में परिवार की भूमिका अद्वितीय है। मातृभाषा का अर्जन परिवार के वातावरण में ही होता है, जो बालक के चिंतन और अभिव्यक्ति का आधार बनती है। यदि परिवार का शैक्षिक और सांस्कृतिक वातावरण समृद्ध है, तो बालक की शब्दावली और वैचारिक स्पष्टता विद्यालय जाने से पहले ही सुदृढ़ हो जाती है। इसके अतिरिक्त, परिवार ही बालक को उसकी परंपराओं और सामाजिक मान्यताओं से परिचित कराता है। आधुनिक समय में डिजिटल उपकरणों के बढ़ते प्रभाव के कारण परिवार की जिम्मेदारी और बढ़ गई है कि वह 'स्क्रीन टाइम' और 'फेस टाइम' के बीच संतुलन बनाए रखे, ताकि बालक के सामाजिक गुण कुंठित न हों।

iii). समुदाय: सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक पहचान का बोध

समुदाय वह सामाजिक मंच है जहाँ बालक अपनी 'स्व' (Self) की पहचान से बाहर निकलकर 'पर' (Others) के साथ जुड़ना सीखता है। यह परिवार और विद्यालय के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। समुदाय के माध्यम से ही बालक में 'सामाजिक उत्तरदायित्व' की

भावना जागृत होती है। जब वह सामुदायिक उत्सवों, सेवा कार्यों या स्थानीय चर्चाओं में भाग लेता है, तो उसे यह बोध होता है कि उसकी भूमिका केवल व्यक्तिगत प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे समाज के प्रति भी जवाबदेह होना है।

सांस्कृतिक पहचान का बोध समुदाय का दूसरा प्रमुख उपहार है। प्रत्येक समुदाय की अपनी लोक-कलाएँ, कहानियाँ, रीति-रिवाज और नैतिक संहिताएँ होती हैं। शिक्षा के इस आयाम में बालक अपनी जड़ों से जुड़ता है, जिससे उसमें एक स्वस्थ 'आत्म-सम्मान' विकसित होता है। समुदाय उसे विविधता में एकता का व्यावहारिक पाठ पढ़ाता है। यदि समुदाय सक्रिय और शिक्षित है, तो वह विद्यालय के लिए एक 'बाहरी प्रयोगशाला' के रूप में कार्य करता है, जहाँ छात्र सामाजिक न्याय, बंधुत्व और सामूहिक समस्या समाधान का वास्तविक अनुभव प्राप्त करते हैं।

iv). विद्यालय: औपचारिक ज्ञान, कौशल और अनुशासनात्मक ढांचा

विद्यालय वह औपचारिक संस्थान है जहाँ प्रकृति, परिवार और समुदाय से प्राप्त बिखरे हुए अनुभवों को एक वैज्ञानिक और व्यवस्थित स्वरूप दिया जाता है। विद्यालय का मुख्य कार्य छात्र को 'संज्ञानात्मक कौशल' (Cognitive Skills) और 'व्यावसायिक सक्षमता' प्रदान करना है। यहाँ पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र इतिहास, विज्ञान, गणित और साहित्य का गंभीर अध्ययन करते हैं, जो उनके तार्किक चिंतन को धार देता है।

कौशल विकास के अलावा, विद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उसका 'अनुशासनात्मक ढांचा' है। समयबद्धता, नियमों का पालन, सामूहिक कार्य (Teamwork) और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जैसे गुण विद्यालयी वातावरण की ही देन हैं। विद्यालय छात्र को एक 'बौद्धिक अनुशासन' सिखाता है, जिससे वह सूचना और ज्ञान के बीच अंतर करना सीखता है। 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यालय का कार्य अब केवल सूचना देना नहीं रह गया है, बल्कि छात्र को 'सीखना कैसे है' (Learning how to learn) के लिए तैयार करना है। यह वह स्थान है जहाँ छात्र के व्यक्तिगत सपनों को राष्ट्र के व्यापक उद्देश्यों के साथ जोड़ा जाता है।

v). राष्ट्र: संवैधानिक लक्ष्यों, अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति समर्पण

शिक्षा का अंतिम और सर्वोच्च आयाम राष्ट्र है। एक सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली वही है जो व्यक्ति को 'स्व' से ऊपर उठाकर 'राष्ट्र-प्रथम' की भावना से ओत-प्रोत करे। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जो भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के लक्ष्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित हों। राष्ट्र के प्रति समर्पण का अर्थ केवल देशभक्ति के नारे लगाना नहीं है, बल्कि संवैधानिक नैतिकता (Constitutional Morality) का पालन करना है।

शिक्षा के माध्यम से ही छात्रों को उनके मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाता है, लेकिन साथ ही उन्हें उनके मौलिक कर्तव्यों (अनुच्छेद 51A) का भी बोध कराया जाता है। राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि छात्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करें और देश की एकता-अखंडता को अक्षुण्ण रखें। जब शिक्षा राष्ट्रवाद के संकुचित घेरे से निकलकर 'संवैधानिक चेतना' पर आधारित होती है, तब वह एक ऐसे उत्तरदायी नागरिक का निर्माण करती है जो वैश्विक पटल पर भारत का गौरव बढ़ा सके। अतः राष्ट्र के प्रति समर्पण ही शिक्षा की सार्थकता की अंतिम कसौटी है।

7. शोध का निष्कर्ष: शिक्षा के पंच-आयामों का समेकन

प्रस्तुत शोध का विस्तृत विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि 21वीं सदी में शिक्षा की सार्थकता केवल सूचनाओं के संग्रहण या व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करने में नहीं, बल्कि प्रकृति, परिवार, समुदाय, विद्यालय और राष्ट्र के बीच एक जीवंत संतुलन स्थापित करने में निहित है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ये पाँचों आयाम एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ प्रकृति छात्र को जीवन का आधार और सह-अस्तित्व सिखाती है, वहीं परिवार उसे नैतिक संस्कारों की वह ठोस भूमि प्रदान करता है जिस पर उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। समुदाय उसे सामाजिकता और सांस्कृतिक गौरव से जोड़ता है, तो विद्यालय इन अनुभवों को एक वैज्ञानिक ढांचा और वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इन सभी आयामों का अंतिम संगम राष्ट्र के प्रति समर्पण और संवैधानिक नैतिकता में होता है।

शोध का मुख्य निष्कर्ष यह है कि यदि शिक्षा तंत्र इन स्तंभों में से किसी एक की भी उपेक्षा करता है, तो छात्र का विकास एकांगी रह जाएगा। वर्तमान डिजिटल युग में, जहाँ 'एल्गोरिथमिक पक्षपात' और 'सामाजिक अलगाव' जैसी नई चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, वहाँ शिक्षा का आधार 'संवैधानिक संस्कृति' होना अनिवार्य है। यह संस्कृति छात्र को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के साथ-साथ एक संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करती है। जैसा कि नेल्सन मंडेला ने कहा था, "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।" निष्कर्षतः, यदि इस हथियार को संवैधानिक न्याय, प्राकृतिक चेतना और पारिवारिक मूल्यों से सुसज्जित कर दिया जाए, तो यह न केवल व्यक्ति का कल्याण करेगी, बल्कि एक न्यायपूर्ण और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त करेगी। शिक्षा का वास्तविक साध्य छात्र के भीतर उस 'संवैधानिक विवेक' को जागृत करना है, जो उसे अधिकारों के प्रति सजग और कर्तव्यों के प्रति समर्पित बनाए। भविष्य की शिक्षा को 'साक्षरता' के संकुचित घेरे से निकलकर 'संस्कारिता' और 'राष्ट्रीय चेतना' का पर्याय बनना होगा, तभी हम एक ऐसे समावेशी समाज की कल्पना कर सकते हैं जहाँ तकनीक मानवीय गरिमा और राष्ट्रहित के अधीन कार्य करे।

8. सुझाव

i). विद्यालयों में 'प्रकृति भ्रमण' और 'सामुदायिक सेवा' को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए।

ii). 'अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी' को केवल अंक सुधार तक सीमित न रखकर संस्कार निर्माण पर केंद्रित किया जाए।

iii). राष्ट्र निर्माण हेतु बच्चों को संवैधानिक मूल्यों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए।

सन्दर्भ सूची

1. केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार। https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
2. दशोरा, एम. (2018). भारतीय समाज में शिक्षा के सामाजिक आधार. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. टैगोर, आर. (2004). शिक्षा का अर्थ और उद्देश्य (पुनर्मुद्रण संस्करण). विश्व भारती प्रकाशन। (मूल कार्य 1917 में प्रकाशित)।
4. पांडेय, आर. एस. (2015). शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार. अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

5. ब्रोंफेनbrenner, यू. (1979). द इकोलॉजी ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट: एक्सपेरिमेंट्स बाय नेचर एंड डिजाइन. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। [U. Bronfenbrenner, The Ecology of Human Development]
6. रूसो, जे. जे. (2010). एमिल: अथवा शिक्षा पर एक निबंध (अनुवादित). राजकमल प्रकाशन। (मूल कार्य 1762 में प्रकाशित)।
7. शर्मा, वाई. के. (2012). शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार. कनिष्क पब्लिशर्स।
8. ड्यूवी, जे. (1916). डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन: एन इंट्रोडक्शन टू द फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन. मैकमिलन कंपनी। [John Dewey, Democracy and Education]
9. यूनिसेफ. (2021). प्रारंभिक बचपन में परिवार और समुदाय की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट. संयुक्त राष्ट्र बाल कोष।
10. गुप्ता, एस. पी. (2019). समकालीन भारत और शिक्षा: ऐतिहासिक और वैधानिक परिप्रेक्ष्य. राखी प्रकाशन ।